मूंगफली में कीट-रोग प्रबंधन

कीट

रोमिल इल्ली– रोमिल इल्ली पत्तियों को खाकर पौधों को अंगविहीन कर देता है। पूर्ण विकसित इल्लियों पर घने भूरे बाल होते हैं। यदि इसका आक्रमण शुरू होते ही इनकी रोकथाम न की जाय तो इनसे फसल की बहुत बड़ी क्षति हो सकती है। इसकी रोकथाम के लिए आवश्यक है कि खेत में इस कीड़े के दिखते ही जगह–जगह पर बन रहे इसके अण्डों या छोटे–छोटे इल्लियों से लद रहे पौधों या पत्तियों को काटकर या तो जमीन में दबा दिया जाय या फिर उन्हें घास–फूँस के साथ जला दिया जाय। इसकी रोकथाम के लिए क्विनालफास 1 लीटर कीटनाशी दवा को 700–800 लीटर पानी में घोल बना प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

माहो– सामान्य रूप से छोटे–छोटे भूरे रंग के कीड़े होते हैं। तथा बहुत बड़ी संख्या में एकत्र होकर पौधों के रस को चूसते हैं। साथ ही वाइरस जनित रोग के फैलाने में सहायक भी होती है। इसके नियंत्रण के लिए इस रोग को फैलने से रोकने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली. को 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव कर दें।

लीफ माइनर– लीफ माइनर के प्रकोप होने पर पत्तियों पर पीले रंग के धब्बे दिखाई पड़ने लगते हैं। इसके गिडार पत्तियों में अन्दर ही अन्दर हरे भाग को खाते रहते हैं और पत्तियों पर सफेद धारियाँ सी बन जाती हैं। इसका प्यूपा भूरे लाल रंग का होता है इससे फसल की काफी हानि हो सकती हैं। मादा कीट छोटे तथा चमकीले रंग के होते हैं मुलायम तनों पर अण्डा देती है। इसकी रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली. को 1 लीटर पानी में घोल छिड़काव कर दें।

कीटों की रोकथाम

- सफेद लट, बिहार रोमिल इल्ली, मूंगफली का माहू व दीमक प्रमुख है। सफेद लट की समस्या वाले क्षेत्रों में बुवाई के पूर्व कार्बोफ्यूरान 3 जी 20–25 कि.ग्रा/हेक्टेयर की दर से खेत में डालें।
- दीमक के प्रकोप को रोकने के लिये क्लोरोपायरीफॉस दवा की 3 लीटर मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- रस चूसक कीटों (माहू, थ्रिप्स व सफेद मक्खी) के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मि.ली./प्रति लीटर या डायमिथोएट 30 ई.सी. का 2 मि.ली./ ली. के मान से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रयोग करें।
- पत्ती सुरंगक कीट के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी. का 1 लीटर/ हेक्टेयर का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोग

बीज सड़न– कुछ रोग उत्पन्न करने वाले कवक जब बीज उगने लगता है उस समय इस पर आक्रमण करते हैं। इससे बीज पत्रों, बीज पत्राधरों एवं तनों पर गोल हल्के भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। बाद में ये धब्बे मुलायम हो जाते हैं तथा पौधे सड़ने लगते हैं और फिर सड़कर गिर जाते हैं। फलस्वरूप खेत में पौधों की संख्या बहुत कम हो जाती है और जगह–जगह खेत खाली हो जाता है। खेत में पौधों की भरपूर संख्या के लिए सामान्य रूप से मूंगफली के प्रमाणित बीजों को बोना चाहिए। अपने बीजों को बोने से पहले 2.5 ग्राम थाइरम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित कर लें।

रोजेट– रोजेट (गुच्छ रोग) मूंगफली का एक विषाणु (वाइरस) जनित रोग है इसके प्रभाव से पौधे अति बौने रह जाते हैं साथ पत्तियों में ऊतकों का रंग पीला पड़ना प्रारम्भ हो जाता है। यह रोग सामान्य रूप से विषाणु फैलाने वाली माहो से फैलता है अतः इस रोग को फैलने से रोकने के लिए पौधों को जैसे ही खेत में दिखाई दें, उखाड़कर फेंक दें। इस रोग को फैलने से रोकने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली. को 3 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव कर दें।

टिक्का– यह इस फसल का बड़ा भयंकर रोग है। आरम्भ में पौधे के नीचे वाली पत्तियों के ऊपरी सतह पर गहरे भूरे रंग के छोटे–छोटे गोलाकार धब्बे दिखाई पड़ते हैं ये धब्बे बाद में ऊपर की पत्तियों तथा तनों पर भी फैल जाते हैं। संक्रमण की उग्र अवस्था में पत्तियाँ सूखकर झड़ जाती हैं तथा केवल तने ही शेष रह जाते हैं। इससे फसल की पैदावार काफी हद तक घट जाती है। यह बीमारी सर्कोस्पोरा परसोनेटा या सर्कोस्पोरा अरैडिकोला नामक कवक द्वारा उत्पन्न होती है। भूमि में जो रोगग्रसित पौधों के अवशेष रह जाते हैं उनसे यह अगले साल भी फैल जाती है इसकी रोकथाम के लिए डाइथेन एम–45 को 2 किलोग्राम एक हजार लीटर पानी में घोलकर/हे. की दर से दस दिनों के अन्तर पर दो–तीन छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण

मूंगफली में प्रमुख रूप से टिक्का, कॉलर और तना गलन और रोजेट रोग का प्रकोप होता है। टिक्का के लक्षण दिखते ही इसकी रोकथाम के लिए डायथेन एम–45 का 2 ग्रा./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। छिड़काव 10–12 दिन के अंतर पर पुनः करें। रोजेट वायरस जनित रोग हैं, इसके फैलाव को रोकने के लिए फसल पर इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मि.ली./लीटर पानी के मान से घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर में कीट-रोग की रोकथाम

• डॉ.पी. मूवेन्थन • डॉ. रेवेन्द्र कुमार साहू
(भा.कृ.अनु.प. – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरौंडा, रायपुर, (छ.ग.)

प्रमुख कीट

फल छेदक– टमाटर का सबसे बड़ा शत्रु है। पत्तों और फूलों को खाने के बाद यह फल को छेदकर अंदर से खाना शुरू कर देता है।

जैसिड– यह हरे रंग के छोटे–छोटे कीट होते हैं, जो पौधों से रस चूस लेते हैं, जिसके कारण पौधों की पत्तियाँ सूख जाती हैं।

सफेद मक्खी– ये सफेद छोटे–छोटे कीड़े होते हैं जो पौधों से उनका रस चूस लेते हैं। इनसे पत्तियों के मुड़ जाने वाली बीमारी (मोजेक) फैलती है।

रोकथाम के लिए फसल बढ़वार की आरंभिक अवस्था में 0.05 प्रतिशत रोगी या मेटासिस्टॉक्स का छिड़काव करें। फल छेदक से प्रभावित फलों और ऐसे कीड़े के अण्डों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें फिर छिड़काव करें। एक पखवाड़े के अंतराल पर यह छिड़काव दोबारा करें।

प्रमुख रोग–

आर्द्र गलन (डेम्पिंग ऑफ) – यह पौधशाला की सबसे प्रमुख बीमारी है, जो संक्रमित बीज और मिट्टी से पनपता है, जिससे जमीन की सतह पर तना भूरा काला होकर गिर जाता है। अधिक रोग के कारण कभी–कभी पूरी पौध भी नष्ट हो जाती है। रोकथाम के लिए बीज जमाव के पश्चात 2 ग्राम कैप्टान रसायन 1 लीटर पानी में घोलकर फव्वारे से डैचिंग करें। हमेशा उपचारित बीज ही प्रयोग करें और नयी भूमि में पौध तैयार करें।

अगेती झुलसा– पत्तों और फलों में गहरे भूरे रंग के धब्बे आते हैं। रोकथाम के लिए 10–15 दिन के अंतराल पर 0.2 प्रतिशत डाइथेन एम–45 के घोल का एक छिड़कें।

पछेती झुलसा– यह रोग बरसात के मौसम में लगता है। इसमें पत्ती के किनारे भूरे–काले रंग के हो जाते हैं। प्रभावित फल में भूरे काले धब्बे बनते हैं, फलस्वरूप पत्तियाँ या फल गिर जाते हैं। रोकथाम के लिए 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर मैन्कोजेब या रिडोमिल एम जेड का छिड़काव करें।

जीवाणु उखटा– रोगग्रस्त पौधों की पत्तियां पीले रंग की होकर सूखने लगती है एवं कुछ समय बाद पौधे सूख जाते हैं। रोकथाम के लिए फसल चक्र अपनायें। 5 ग्राम थायोफनेट–3 ग्राम रीडोनील–6 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लिन प्रति 15 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें।